7

भारत सरकार की कृषि नीति

तुम्हारे क्षेत्र में-
फसलों के कौन-कौन से बीज बोए जाते हैं? उनमें से कौन से संकर और कौन से देशी बीज हैं ?
अपने क्षेत्र के संकर और देशी बीजों की इन बिन्दुओं पर तुलना करो–

– फसल की अवधि	*– कितनी बार सिंचाई*	*– उत्पादन*
– खाद	*– बीमारियां*	*– दवाएं*

भारत सरकार ने अपनी नई कृषि नीति में संकर बीजों से खेती पर बहुत ज़ोर दिया है। आओ इस पाठ में समझें कि नई कृषि नीति कब व कैसे बनाई गई।

स्वतंत्रता के बाद कृषि की समस्याएं

तुमने पढ़ा कि सरकार विकास के लिए पंचवर्षीय योजनाएं बनाती है। इन योजनाओं मे सरकार कृषि नीति बनाती है। कृषि नीति बनाते समय सरकार को यह विचार करना पड़ता है कि खेती-किसानी व अनाज उत्पादन मे क्या समस्याएं हैं? किसानो के क्या हालात हैं? इन समस्याओ को कैसे हल किया जाए? जैसे-जैसे परिस्थितियां बदलती हैं वैसे सरकार को कृषि नीति भी बदलनी पड़ती है।

जब हमारा देश अंग्रेज़ शासन से आज़ाद हुआ तब हमारे अधिकांश किसानो के हालात बहुत बुरे थे। भारत के हर 100 लोगो में से लगभग 75 लोग कृषि पर निर्भर थे; पर इनमें आधे से अधिक लोगो के पास ज़मीन नही थी या दो एकड़ से कम ज़मीन थी। चंद बड़े ज़मींदारों के पास कुल खेतिहर भूमि का आधे से अधिक हिस्सा था। उत्पादन भी बहुत कम था। एक एकड़ मे 2-3 बोरी अनाज से अधिक नही होता था। बहुत कम ज़मीन सिंचित थी। बहुत से ग़रीब किसान और मज़दूर भुखमरी और कुपोषण के शिकार थे। हर साल कही न कही सूखा पड़ता था या बाढ़ आती थी। ग़रीब किसानो के पास इतना अनाज नहीं रहता था कि वे ऐसे बुरे दिनो का सामना कर पाएं। अकाल में लाखों लोग भूख और बीमारी के शिकार हो जाते थे। राहत की व्यवस्था करने के लिए सरकार के पास अनाज का भंडार नही था। अनाज की कमी के कारण हमें विदेशों से अनाज मंगवाना पड़ रहा था।

सरकार के सामने दो खास उद्देश्य थे। एक - अनाज उत्पादन बढ़ाना और बुरे समय के लिए भंडार भी बनाना। दूसरा - ग़रीब किसानों और मज़दूरों को जीवन के पर्याप्त साधन उपलब्ध कराना ताकि वे भुखमरी का शिकार न बने।

इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए 1950-1965 के बीच सरकार ने कुछ कदम उठाए, जैसे :

1. सिंचाई और बिजली के लिए बड़े-बड़े बांध बनाए, जैसे भाखड़ा नंगल (पंजाब), दामोदर घाटी (प. बंगाल), हीराकुड (उड़ीसा), नागार्जुन सागर (आंध्र प्रदेश), गांधीसागर (मध्य प्रदेश)
2. रासायनिक खाद के कारखाने खोले। किसानों तक खाद पहुंचाने के लिए गांवो में सहकारी समितियां बनाईं।
3. कृषि अनुसंधान केन्द्र और विश्वविद्यालय खोले।

इन प्रयासों के कारण पहले से ज़्यादा ज़मीन की सिंचाई हो पाई एवं अधिक ज़मीन पर खेती होने लगी। नतीजा यह हुआ कि पूरे देश में अनाज का उत्पादन बढ़ने लगा।

चित्र में अनाज की एक बाली से कितने लाख टन अनाज दिखाया गया है?

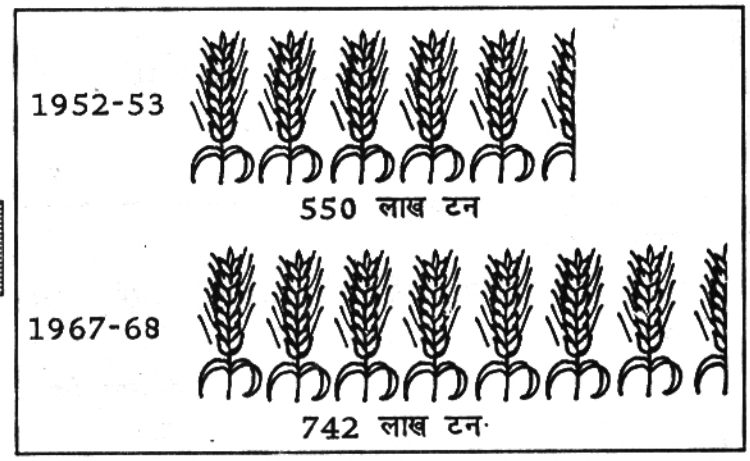

अनाज का उत्पादन बढ़ा

इतना सब होने पर भी कमी पड़ रही थी। दूसरे देशों से जो अनाज मंगाना पड़ता था, उसकी मात्रा बढ़ती गई। हमारे पास अनाज खरीदने के लिए पैसे नही थे तो हमने दूसरे देशों से खासकर, अमरीका से अनाज उधार लेना शुरू किया।

खेती	सिंचाई
1966 में 3405 लाख एकड़	1966 में 658 लाख एकड़
1951 में 2967 लाख एकड़	1951 में 523 लाख एकड़
कितना बढ़ा?	

नई कृषि नीति अपनाने का दबाव

हमारे नेता और विशेषज्ञ चिन्तित थे कि हमें उधार पर बहुत सा अनाज आयात करना पड़ रहा था। हमारे देश की हालत साहूकार से उधार लेने वाले किसान जैसी होने लगी थी। जिन देशों से हम अनाज उधार लेते थे, वे हमारे ऊपर दबाव डालने लगे और अपनी बात हमसे मनवाने की कोशिश करने लगे।

अमीर देशों के नेता हम से पूछते कि आप उधार मांगने क्यों आते हैं? आप अपने देश में अनाज का उत्पादन और क्यों नहीं बढ़ाते? वे इस बात का दबाव डालने लगे कि हम उन्हीं तरीकों से खेती करने लगें जो उनके यहां अपनाए जा रहे थे। उनके विशेषज्ञों ने ऐसे बीज बनाए थे जो एक एकड़ सिंचित ज़मीन पर 15-20 बोरे अनाज तक पैदा कर सकते थे। वे यह मांग करने लगे कि हम भारत में भी इन्हीं बीजों से खेती करें। उनका कहना था कि भारत में पहले से सिंचाई वाली ज़मीन पर नए बीजों का इस्तेमाल शुरू करना चाहिए। फिर धीरे-धीरे सभी इलाकों में सिंचाई फैला कर सभी जगह नए बीजों का इस्तेमाल होना चाहिए।

पर समस्या यह थी कि नए बीजों के लिए काफी ज्यादा रासायनिक खाद डालने की ज़रूरत थी जो भारत में तब बहुत कम बनती थी। दूसरी समस्या यह थी कि नए बीजों की फसलों में बीमारियां ज़्यादा आसानी से लगती थी। उनके लिए कीटनाशक दवा का ज़्यादा इस्तेमाल करना ज़रूरी था। ये दवाएं भी तब भारत में कम ही बनती थी।

अमीर देश चाहते थे कि भारत रासायनिक खाद व दवाएं उनके यहां से खरीद ले और उनके उद्योगपतियों को इजाज़त दे तो वे भारत में ही खाद व दवा के कारखाने डाल लें।

भारतीय नेता बड़ी दुविधा में थे। अभी तक विदेशों

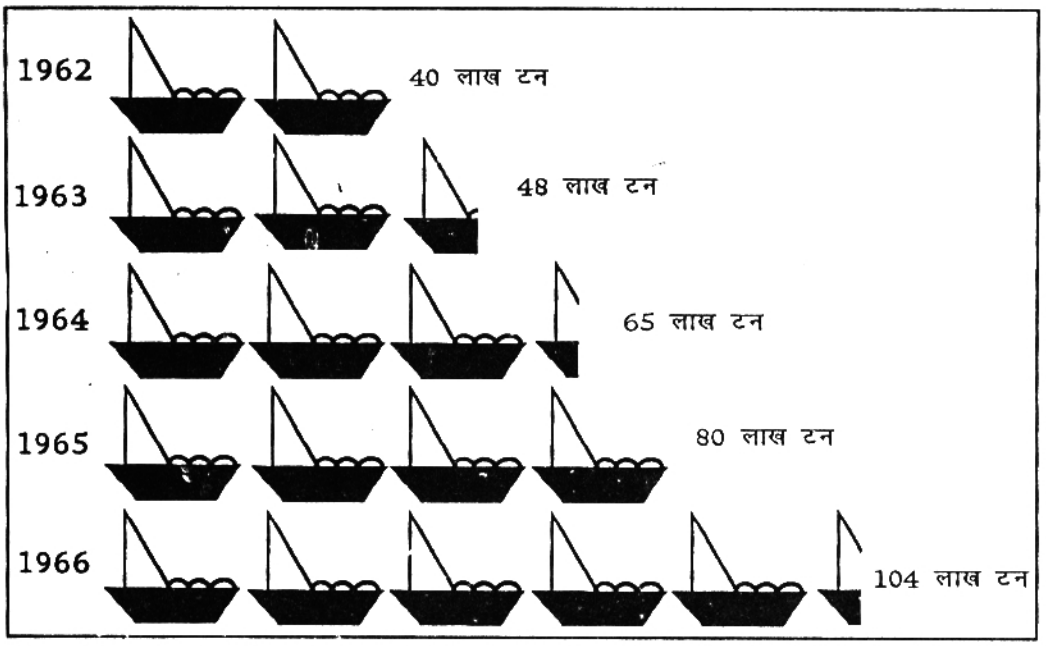

अनाज का बढ़ता आयात

से अनाज ही खरीद रहे थे। अब खाद-दवा भी खरीदनी पड़े तो पैसो की ज़रूरत होगी। पैसे नही हैं तो फिर वही उधार लेने का सिलसिला चलेगा। इस तरह भारत अमीर देशों पर निर्भर बना रहेगा और आत्मनिर्भर नही बन पाएगा। जबकि, स्वतंत्रता के बाद भारत यह चाहता था कि वह अपनी ज़रूरत की चीज़े खुद बनाए।

एक तरफ यह भी सच था कि नए बीजो से पैदावार बहुत बढ़ जाएगी और भारत जल्दी ही अनाज के मामले मे आत्मनिर्भर बन पाएगा। धीरे-धीरे दवा और खाद के कारखाने भारत में ही लगाए जा सकते थे। इन सब बातों पर बहुत चर्चा और बहस हुई। दूसरी तरफ, अमीर देशों की सरकारें अनाज उधार देने में आनाकानी करने लगीं थीं। ऐसे मे देश मे अनाज का उत्पादन जल्दी से बढ़ाना बहुत ज़रूरी हो गया था।

सन् 1965-66 की बात है। तब भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध छिड़ा हुआ था। उस साल वर्षा भी बहुत कम हुई थी, और देश मे भयंकर सूखा पड़ा हुआ था। अनाज की बहुत कमी थी और सब जगह अकाल मंडरा रहा था। ऐसी संकट की हालत में भी जिन देशों से हम उधार लेते थे वे आनाकानी करने लगे। उनकी सरकार ने भारत भेजे जा रहे अनाज के जहाजो को रोक लिया ताकि वे अपनी बात मनवा सकें।

चित्र में एक पूरे जहाज से कितने लाख टन अनाज दिखाया गया है ?

1966 मे छठवे जहाज का जो थोड़ा सा हिस्सा दिख रहा है उससे कितने लाख टन अनाज दर्शाया गया है ?

भारतीय नेताओं के सामने क्या दुविधा थी ?

नई कृषि नीति (हरित क्रांति)

सन् 1966-67 मे भारत सरकार ने नई कृषि नीति का ऐलान किया। यह नीति मुख्य रूप से नए किस्म के संकर बीजों के प्रसार से संबंधित थी।

संयुक्त राज्य अमेरिका के वैज्ञानिकों ने मेक्सिको देश मे शोध कार्य करके गेहूं के नए बीज विकसित किये थे। धान के नए बीज फिलिप्पाईंस देश में विकसित किए गए थे। इनकी क्या खासियत है? इनको उगाने के लिये क्या-क्या चाहिए होता है?

नए बीज कम समय में पकते हैं, अनाज की पैदावार बहुत अधिक और फसल छोटे कद की होती है। इन

बीजों के लिए पर्याप्त सिंचाई, रसायनिक खाद और दवा की ज़रूरत होती है।

मगर इन सबको किसान लायेगा कहां से? हर चीज़ बाज़ार से मोल लेना पड़ेगी। पहले तो बीज, खाद सब कुछ का प्रबंध किसान खुद कर लेता था।

अब तो खेती बाज़ार से खरीदे सामान पर निर्भर हो गई है। किसानो के पास इतना पैसा कहां रहता है कि किसानी की हर चीज़ बाज़ार से इतने ऊंचे दामो मे खरीदे। इसलिये सरकार ने बैंको से किसानो को कम ब्याज पर आसानी से लोन देने का प्रबंध किया।

सरकार किसानो को कम ब्याज पर ऋण देती है। फसल कटते ही किसान को ऋण लौटाना पड़ता है। ये बाते तुमने कक्षा 6 के पाठ 'किसान और मज़दूर' मे समझी हैं। सिंचाई का क्षेत्र बढ़ाने के लिए सरकार ने मोटर पंप के लिए कम ब्याज पर ऋण देने का प्रबंध भी किया। पर ये मोटर पंप चले कैसे? इसके लिए बिजली या डीज़ल की ज़रूरत थी। इसकी व्यवस्था करना भी सरकार की ज़िम्मेदारी थी।

नई खेती का मतलब यह हुआ कि किसान को अपनी अधिकांश उपज बेचनी पड़ती है ताकि उस पैसे से खाद आदि खरीद सके व लोन लौटा सके।

इतनी कीमती लागत लगाकर किसान ने अनाज उगाया तो उसे उसका सही दाम तो मिलना चाहिए। मगर जब फसल कटने के बाद किसान अनाज बेचने जाये तो दाम बहुत कम होता है। इस कारण सरकार ने कहा वह उचित (ऊंचे) दामो पर किसानो से अनाज खरीदेगी। किसान बेफिकर होकर अनाज उगाएं। किसानो से उचित दाम पर अनाज खरीदने के लिए **भारतीय खाद्य निगम** बना।

समर्थन मूल्य : हर साल सरकार हर अनाज का न्यूनतम भाव (समर्थन मूल्य) घोषित करती है। समर्थन मूल्य का अर्थ है इस कीमत मे किसान जितना अनाज बेचना चाहेगा उतना अनाज सरकार खरीदेगी। इस कारण से अब व्यापारी कम दाम पर अनाज बेचने के लिये किसानो को मजबूर नही कर सकते। भारतीय खाद्य निगम सरकार की तरफ से खरीदी करता है। हर साल यह निगम लाखो टन अनाज खरीदता है।

तो फिर संक्षेप मे देखें सरकार को नई कृषि नीति मे क्या-क्या करना पड़ा।

- बीज, खाद, दवा का प्रबंध।
- बैंक से लोन का प्रबंध।
- भारतीय खाद्य निगम द्वारा उचित दामो पर खरीदी।
- सिंचाई के लिए मोटर पंप, बिजली, डीज़ल आदि का प्रबंध।

नई कृषि नीति कहां-कहां लागू की गई ?

शुरू मे इस नीति को पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश और तमिलनाडु के कुछ ज़िलों मे शुरू किया गया। इन्ही इलाको मे पहले से सिंचाई का प्रबंध था। नए बीज के लिए सिंचाई बहुत ज़रूरी जो थी।

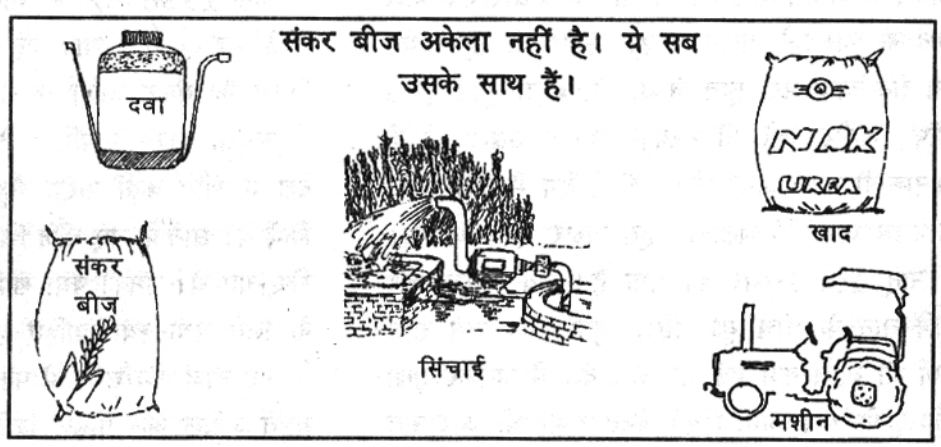

पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तरप्रदेश मे गेहूं और तमिलनाडु मे धान पर जोर रहा। बाद में पंजाब मे भी धान उगाया जाने लगा। आजकल इस नीति को एक एक करके सारे सिंचित क्षेत्रो मे लागू किया जा रहा है। सिंचाई भी फैलाई जा रही है।

नई कृषि नीति मे अपनाए गए संकर बीजों की क्या ज़रूरतें थी?

नई कृषि नीति किन क्षेत्रो मे अपनाई जा सकती थी?

किसान को नई कृषि नीति का तरीका अपनाने के लिये पैसो की ज़रूरत क्यो पड़ी?

सरकार ने नई कृषि नीति अपनाने के लिये क्या प्रबंध किए?

भारतीय खाद्य निगम का क्या कार्य है?

नई कृषि नीति से क्या हासिल हुआ, क्या नहीं हुआ?

नए बीजों से अनाज का उत्पादन बढ़ा। गेहूं में यह उत्पादन बहुत अधिक बढ़ा, परंतु दूसरी फसलों में उत्पादन बहुत ज़्यादा नहीं बढ़ पाया। जैसे कि तुमने पढ़ा, नई कृषि नीति के लिए सभी प्रकार के प्रबंध ज़रूरी हैं। यदि इन प्रबंधों में कमी आती है या कई चीज़ें नहीं हो पाती हैं तो उत्पादन पर बुरा असर होता है। इस कारण गेहूं का उत्पादन भी केवल उन इलाकों में अधिक बढ़ा जहां सभी प्रकार के प्रबंध हो पाए।

उत्पादन बढ़ने के कारण अब हमें विदेशो से अनाज आयात करने की ज़रूरत नही रही। जो अनाज हम विदेशों से खरीदते थे उसकी मात्रा बहुत घट गई। संकट की स्थितियों का सामना करने के लिये सरकार के पास अनाज का बड़ा भंडार बन गया। 1967 मे सरकार के भंडार में केवल 19 लाख टन अनाज था, 1987 मे बढ़कर 127 लाख टन हो गया। हम अनाज के उत्पादन मे लगभग आत्मनिर्भर हो गये।

पर इस नीति से कई समस्याएं हल नही हुई।

नई कृषि नीति के तरीके से उत्पादन बढ़ाने के लिये सिंचाई ज़रूरी है। जहां-जहां सिंचाई फैली है, नहर, पंप या कुंओं से, वहीं उत्पादन बढ़ पाया है।

प्रति एकड़ उत्पादन : धान और गेहूं

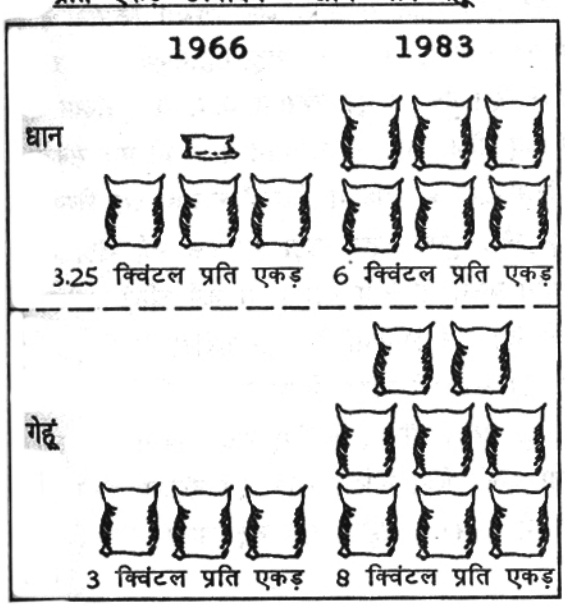

देश में अनाज का कुल उत्पादन

सूखे क्षेत्रों में उत्पादन नहीं बढ़ा। 1965 में केवल 20% ज़मीन पर सिंचाई होती थी।

1977-78 तक लगभग 24% यानी 1/4 हिस्से को सिंचित किया गया।

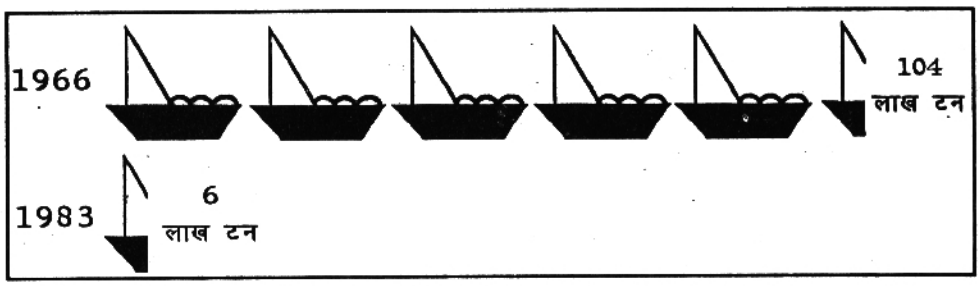

अनाज का आयात

1984-85 तक 30% यानी लगभग एक तिहाई हिस्से को सिंचित किया गया। दो तिहाई हिस्सा अब भी सूखा है।

शायद कोई सोचे कि इसमें क्या दिक्कत है? सभी जगह सिंचाई बढ़ा दो तो सब की उन्नति हो जाएगी। एक समस्या यह है कि हमारे देश में जितनी खेती लायक भूमि है उस का 55% यानी आधे से थोड़ा अधिक हिस्सा ही सिंचित किया जा सकता है। बाकी भूमि पर सिंचाई करना बहुत कठिन और बहुत ही ज़्यादा महंगा काम होगा। इसलिये सरकार को सूखी खेती बेहतर बनाने के तरीके भी सोचने होंगे। बंजर भूमि को खेती लायक बनाने के प्रयास करने होंगे। तभी पूरे देश में अनाज का उत्पादन बढ़ सकता है।

तुमने भूगोल के पाठों में सिंचाई के बारे में बहुत कुछ पढ़ा है।

चर्चा करो कि भारत की बहुत सी ज़मीन पर सिंचाई किन-किन कारणों से नहीं हो सकती। सूखे इलाकों में खेती के विकास के लिए सिंचाई को छोड़कर और क्या-क्या किया जाना चाहिए- इस पर भी चर्चा करो।

नई कृषि नीति के साथ और भी कई समस्यायें हैं। तुमने देखा कि नई कृषि नीति के लिए कई प्रकार के प्रबंध करना ज़रूरी हो गया। सिंचाई, बिजली, खाद व डीज़ल के लिए खनिज तेल, बैंक से ऋण आदि। यह सब सुचारु रूप से हो यह आसान नहीं था। कई नई समस्यायें सामने आईं, जैसे - खनिज तेल की कमी, बिजली उत्पादन की कमी, सिंचाई योजनाओं का पूरा उपयोग नहीं हो पाना आदि।

सरकारी भंडार

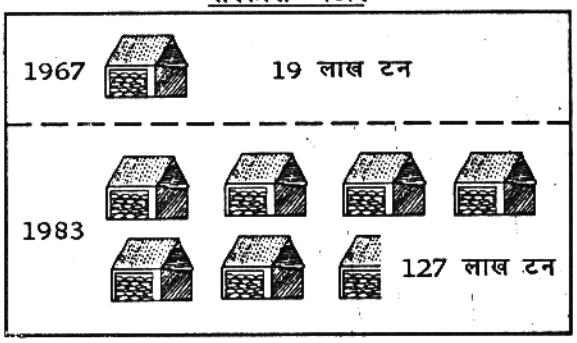

नई कृषि नीति से छोटे और मध्यम किसानों को कम लाभ ही मिल पाया। यह महत्वपूर्ण कमी रही क्योंकि इस देश में ऐसे किसान बहुत बड़ी संख्या में हैं। नए बीज, खाद का उपयोग कोई भी कर सकता है, फिर छोटे और मध्यम किसानों के साथ क्या दिक्कतें थीं? जैसे तुमने पहले पढ़ा था इस नई खेती का उपयोग करने के लिए बाज़ार से कई चीज़ें खरीदनी पड़ती हैं। इन किसानों के पास खरीदी के लिए पैसे नहीं थे। सरकारी ऋण भी इन्हें आसानी से उपलब्ध नहीं हो पाया। सिंचाई के लिए मोटर पंप की व्यवस्था करना इनके लिए कठिन था। इन कारणों से इनके खेतों में उत्पादन बहुत नहीं बढ़ पाया।

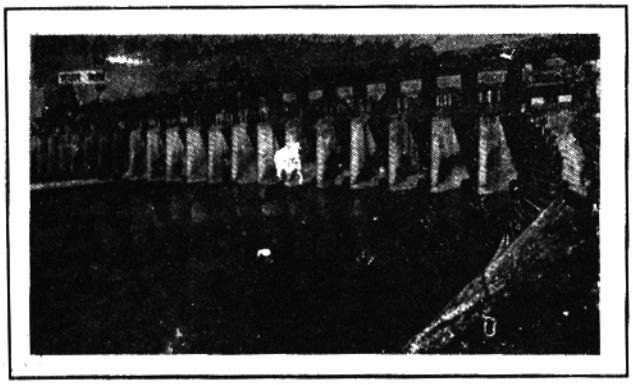

नांगल बांध

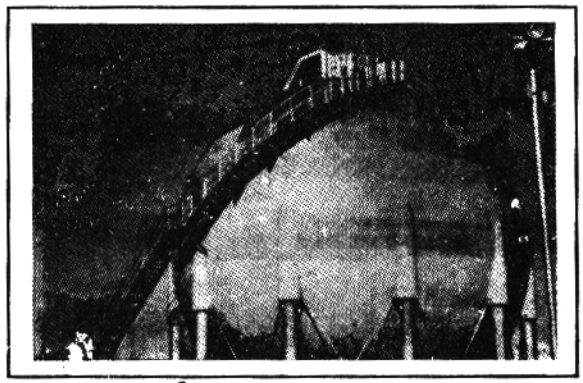

रसायनिक खाद का एक कारखाना

अभ्यास के प्रश्न

1. स्वतंत्रता के बाद भारत की खेती में क्या-क्या समस्याएं थीं तीन चार वाक्यों में लिखो।
2. 1968 तक अनाज के उत्पादन की समस्या कितनी हल हो गई और कितनी बनी हुई थी ?
3. नए बीजों की खेती से कौन सी समस्याएं हल हुईं और कौन सी बनी हुई हैं?
4. सोच कर बताओ कि नई कृषि नीति को हरित क्रांति क्यों कहा गया है?
5. खेती के लिए सरकार कई चीज़ों का प्रबंध करती है। तुम अपने आसपास ये प्रबंध देखते हो। इनकी एक सूची बनाओ। इससे किसानों को क्या फायदा हुआ?
6. सरकार तो कोई व्यापारी नहीं है। फिर वह किसानों से लाखों टन अनाज क्यों खरीदती है?
7. यदि बैंक से लोन का प्रबंध नहीं हो पाए तो इसका किसानों पर क्या प्रभाव पड़ेगा?